इलाहाबाद जिले के कौड़िहार–II और मेजा ब्लॉक में उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं के नामांकन के उपरान्त कक्षा में अपेक्षित स्तर की उपस्थिति न होने के कारणों का अध्ययन

आभा उपाध्याय*
*इण्टरकालेज प्रवक्ता, महर्षि दयानन्द इण्टर कालेज मनौरी, इलाहाबाद

सारांश

नारी शिक्षा का स्वरूप समाज में नारी के स्थान से जुड़ा हुआ माना जाता है। आज विश्व के प्रायः हर देश में नारी शिक्षा के प्रति विशेष चेष्टा एवं चेतना विकसित हुई है, क्योंकि सामाजिक न्याय एवं समानता जैसे नवीन सामाजिक दर्शन के आलोक में शैक्षिक अवसरों की समानता उपलब्ध कराना एक राष्ट्रीय जिम्मेदारी मानी जाती है। स्त्री शिक्षा तथा महिला विकास के ऐतिहासिक परिपेक्ष्य को देखें तो 20वीं सदी में महिलाएं घर से निकली और विकास पर समाज और राज्य का ध्यान रखा गया। 70 के दशक को 'महिला कल्याण' का दशक माना गया। 80 के दशक को महिला विकास का दशक तथा नब्बे को महिला सशक्तीकरण का माना गया। सन् 2001 महिला सशक्तीकरण का वर्ष था। परन्तु इन सबके बावजूद 'वर्तमान शिक्षा व्यवस्था' का प्रारूप महिलाओं की दृष्टि से बहुत व्यवहारिक व प्रासंगिक नहीं है। विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं की आवश्यकताओं और सुविधाओं के अनुकूल नहीं है। भारतीय स्त्री–शिक्षा के मार्ग में आने वाली अनेक बाधाओं जैसे– विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक, व्यक्तिगत, विद्यालयीय आदि का उल्लेख किया गया है। उक्त क्षेत्रों में किये गये कार्यों में आर्थिक व सामाजिक समस्याओं पर पर्याप्त विचार किया गया है किन्तु पारिवारिक व व्यक्तिगत तथा विद्यालयीय समस्याओं पर पर्याप्त विचार नहीं किया गया है। अतः ग्रामीण क्षेत्रों में छात्राएं विद्यालय में नामांकन तो करा लेती हैं किन्तु कतिपय कारणों से वह प्रतिदिन विद्यालय में उपस्थित होकर शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाती हैं। ऐसी छात्राओं की समस्याओं के कारणों को जानना इस शोध की आवश्यकता का प्रमुख अंग है। इन समस्याओं को उचित सुझावों द्वारा दूर किया जा सकेगा ताकि छात्राएं प्रतिदिन विद्यालय आकर शिक्षा ग्रहण कर सकेंगी। यही इस शोध का महत्वपूर्ण योगदान होगा।

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य इलाहाबाद जिले के कौड़िहार–II और मेजा ब्लॉक में उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के नामांकन के उपरान्त कक्षा में अपेक्षित स्तर की उपस्थिति न होने के कारणों का अध्ययन करना है। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि द्वारा शोधार्थिनी ने स्वनिर्मित ''उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अनुपस्थिति के प्रति छात्राओं की "अभिवृत्ति मापनी'' का प्रयोग किया। शोध के उपरान्त पाया गया है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं की उपस्थिति पर आर्थिक , सामाजिक , पारिवारिक , व्यक्तिगत तथा विद्यालयीय समस्याओं का प्रभाव पड़ता है तथा इस समस्या के कारण वह विद्यालय नहीं जा पाती हैं।

मुख्य शब्दः– आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक, व्यक्तिगत, विद्यालयीय, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, नामांकन, अपेक्षित स्तर।

1. प्रस्तावना

राष्ट्र, समाज, प्रशासन तथा परिवार के क्रियाकलाप तब तक उचित ढंग से नहीं किये जा सकते जब तक स्त्रियों को शिक्षा न मिले। अतः वही देश उन्नति करते हैं जहँ स्त्रियों को उचित स्थान दिया जाता है तथा उनकी शिक्षा का भी उचित प्रबन्ध किया जाता है। अतएव स्त्रियों को भी वहीं शैक्षिक सुविधाएं मिलनी चाहिए जो पुरूषों के लिए हों। हो सके तो उन्हें विशेष सुविधाएं दी जानी चाहिए। लड़के की शिक्षा केवल एक व्यक्ति की शिक्षा है किन्तु एक लड़की की शिक्षा पूरे परिवार की शिक्षा है। स्त्री शिक्षा के बिना लोग शिक्षित नहीं हो सकते। यदि शिक्षा को पुरूषों तथा स्त्रियों के लिए सीमित करने का प्रश्न हो तो यह अवसर स्त्रियों को दिया जाय क्योंकि उनके द्वारा भावी संतान को शिक्षा दी जाती है।

अतः स्त्री शिक्षा के मार्ग में आने वाली आर्थिक समस्याएँ जैसे– धनाभाव के कारण फीस जमा न कर पाना, पिता का गरीब होना, खेती करना, आमदनी कम होना, बालिकाओं का मजदूरी करना, किताबें तथा ड्रेस न खरीद पाना आदि है।

सामाजिक समस्याएं– जैसे पर्दा प्रथा, बाल विवाह, लड़के–लड़की में अन्तर आदि परम्परागत पूर्वाग्रह व सामाजिक कुरीतियाँ हैं।

पारिवारिक समस्याएं– जैसे– माता–पिता खेत पर काम को चले जाते हैं तो घर देखना, भाई–बहन की देखभाल करना, शादी–विवाह के बाद ससुराल वालों के दबाव के कारण विद्यालय न जाना आदि है।

व्यक्तिगत समस्याएं– जैसे– विद्यालय आने जाने में आने वाली समस्याएं जैसे– धूप, वर्षा, ठंडी आदि में यातायात के साधनों का अभाव, शारीरिक अस्वस्थता, विद्यालय में अत्यधिक अनुशासन, शारीरिक थकान, सहपाठियों का व्यवहार अच्छा न होना, मनपसन्द विद्यालय न होना आदि है।

विद्यालयीय समस्याएं– जैसे– पुस्तकालय में अच्छी पुस्तकों का अभाव, अध्ययन कक्ष व बैठक व्यवस्था ठीक न होना, विद्यालय का शैक्षिक व प्राकृतिक वातावरण अच्छा न होना, पाठ्यक्रम कठिन होना, महिला अध्यापिकाओं की कमी होना आदि है।

इन उपर्युक्त समस्याओं के कारण बालिकाएं नामांकन तो करा लेती हैं, परन्तु विद्यालय में पूर्णरूप से उपस्थिति नहीं दे पाती हैं।

अतः इन सब समस्याओं के कारण ही बालिकाओं की उच्चतर माध्यमिक शिक्षा प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होती है। जिससे बालिकाएं इसका लाभ नहीं उठा पाती हैं।

2. शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध में मुख्य उद्देश्य है इलाहाबाद जिले के कौड़िहार–II और मेजा ब्लॉक में उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के नामांकन के उपरान्त कक्षा में अपेक्षित स्तर की उपस्थिति न होने के कारणों का अध्ययन। प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित बिन्दुओं को उद्देश्य के रूप में लिया गया है–

1. कौड़िहार–II और मेजा ब्लॉक के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों मे अनुपस्थित छात्राओं की आर्थिक समस्याओं का पता लगाना।
2. कौड़िहार–II और मेजा ब्लॉक के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों मे अनुपस्थित छात्राओं की सामाजिक समस्याओं का पता लगाना।
3. कौड़िहार–II और मेजा ब्लॉक के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों मे अनुपस्थित छात्राओं की पारिवारिक समस्याओं का पता लगाना।
4. कौड़िहार–II और मेजा ब्लॉक के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों मे अनुपस्थित छात्राओं की व्यक्तिगत समस्याओं का पता लगाना।
5. कौड़िहार–II और मेजा ब्लॉक के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों मे अनुपस्थित छात्राओं की विद्यालयीय समस्याओं का पता लगाना।

3. अध्ययन की परिकल्पना

प्रस्तुत शोध कार्य में निम्नलिखित शोध परिकल्पना का निर्माण किया गया है–

3.1 शोध की मुख्य परिकल्पना

शोध की मुख्य परिकल्पना इस प्रकार है–

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर नामांकित छात्राओं की अनुपस्थिति में कई कारक प्रभावी होते हैं, जिनमें मुख्यतः आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक, व्यक्तिगत एवं विद्यालयीय हैं। इन कारकों का विद्यालय में नामांकित छात्राओं के अनुपस्थित होने में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में प्रभाव पड़ता है।

शोध में इस मुख्य परिकल्पना के परीक्षण हेतु निम्नांकित नकारात्मक शून्य परिकल्पनाओं का निरूपण अधोलिखित रूप में किया गया है ताकि मुख्य शोध परिकल्पना के मान्य या अमान्य घोषित किये जाने की स्थिति में उसके ठोस प्रमाण उपलब्ध हो सकें–

3.2 शोध की नकारात्मक शून्य परिकल्पना

1. कौड़िहार–II और मेजा ब्लॉक के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में नामांकित छात्राओं की उपस्थिति पर आर्थिक समस्याओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. कौड़िहार–II और मेजा ब्लॉक के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में नामांकित छात्राओं की उपस्थिति पर सामाजिक समस्याओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
3. कौड़िहार–II और मेजा ब्लॉक के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में नामांकित छात्राओं की उपस्थिति पर पारिवारिक समस्याओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
4 कौड़िहार–II और मेजा ब्लॉक के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में नामांकित छात्राओं की उपस्थिति पर व्यक्तिगत समस्याओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
5. कौड़िहार–II और मेजा ब्लॉक के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में नामांकित छात्राओं की उपस्थिति पर विद्यालयीय समस्याओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

4. प्रस्तुत शोध से सम्बन्धित कुछ अन्य शोध कार्यों का विवरण

प्रस्तुत अध्ययन की समस्या से सम्बन्धित किये गये कुछ प्रमुख शोध कार्यों का विवरण निम्नवत है–

मित्रा (1961) ने स्त्री शिक्षा के विकास में अवरोधक कारणों तथा भारतीय स्त्री को प्राप्त शैक्षिक सुविधाओं एवं उनकी उपयोगिता का अध्ययन किया अपने अध्ययन के आधार पर मित्रा जी पाते हैं कि भारत में सभी तरफ स्त्री शिक्षा का तेजी से प्रसार हुआ है। स्त्रियों के लिए विभिन्न राज्यों में राज्य समितियों का गठन किया गया है। स्त्रियों हेतु विशेष पाठ्यक्रमों जैसे– गृह शिक्षा, कला, चित्रकारी, संगीत, नर्सिंग इत्यादि की आवश्यकता पर भी बल दिया गया है। सहशिक्षा संस्थानों को अनेक शैक्षिक सुविधाएँ प्रदान की जा रही है।

लाल (1974) ने अनुसूचित जाति तथा जनजाति के विद्यार्थियों की सामाजिक पृष्ठभूमि, उनके विद्यालय के प्रकार, तथा उनकी आदत, सहभागिता अन्य सहभागी क्रियाएँ तथा शैक्षिक एवं व्यावसायिक विचारों का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि पूरी राजस्थान की 15.87% जनसंख्या अनुसूचित जाति तथा जनजाति की है। अनुसूचित जाति तथा जनजाति की एक बड़ी भाग की जनसंख्या गाँवों में रहती है। दोनों वर्गों के लिए शैक्षिक स्तर, पंजीकरण संख्या अन्य जातियों की अपेक्षा अनुसूचित जाति तथा जनजाति के विद्यार्थी कला वर्ग के विषयों के अध्ययन को पसन्द करते हैं। दोनों वर्ग के विद्यार्थी बाहरी क्रिया कलापों में बहुत कम भाग लेते हैं। दूसरे विद्यार्थी तथा अध्यापक इन विद्यार्थियों के साथ आपस में भेदभाव नहीं करते हैं।

सगुफ्ता (2003) ने बस्ती जिले की बालिकाओं की विभिन्न शैक्षिक समस्याओं, सामाजिक, आर्थिक स्तरों पर अभिभावकों की मनोवृत्ति और उपलब्ध सुविधाओं के सम्बन्ध में अध्ययन किया। इन्होने अध्ययन के द्वारा आवागमन की समस्या, घरेलू कार्य सम्बन्धी व्यवस्था, माता–पिता की अशिक्षा, लड़कियों के लिए

कोचिंग की सुविधा की कमी, प्रभावपूर्ण मार्गदर्शन की कमी इत्यादि समस्याओं को उजागर किया।

5. अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। यह विधि विभिन्न समस्याओं से सम्बन्धित आँकड़ों के संकलन का महत्वपूर्ण साधन व उपकरण है।

5.1 अध्ययन की जनसंख्या

प्रस्तुत शोध में जनसंख्या या समग्र के रूप में इलाहाबाद के कौड़िहार–प्प व मेजा ब्लॉक के उच्चतर माध्यमिक स्तर के 45 विद्यालयों की कक्षा 11 व 12 की सम्पूर्ण छात्राओं को लिया गया था।

5.2 अध्ययन का प्रतिदर्श

प्रस्तुत शोध में 45 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में से 4 विद्यालयों को प्रतिदर्श के रूप में चुना गया जो निम्नवत् हैं–

5.3 शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध में ऑकड़ों के संकलन हेतु शोधार्थिनी द्वारा स्वनिर्मित ''उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अनुपस्थिति के प्रति छात्राओं की "अभिवृत्ति मापनी'' का प्रयोग किया गया जो तीन बिन्दुओं पर आधारित लिकर्ट मापनी है। ये तीन बिन्दु–सहमत, तटस्थ एवं असहमत है। इसमें कुल 30 कथन है, जिस पर छात्राओं ने अपनी सहमति, तटस्थता तथा असहमति व्यक्त की थी।

इस उपकरण के माध्यम से छात्राओं के नामांकन के बाद विद्यालय में अनुपस्थित होने की समस्याओं के 5 क्षेत्रों को चुना गया – आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक, व्यक्तिगत एवं विद्यालयीय। इन सभी क्षेत्रों से सम्बन्धित 40 प्रश्नों का निर्माण किया गया था जिसमें से कुल 30 प्रश्नों को विशेषज्ञों की राय से लिया गया। आर्थिक समस्या सम्बन्धी 5 प्रश्न, सामाजिक समस्या सम्बन्धी 4 प्रश्न, पारिवारिक समस्या सम्बन्धी 3 प्रश्न, व्यक्तिगत समस्या सम्बन्धी 11 प्रश्न व विद्यालयीय समस्या सम्बन्धी 7 प्रश्नों को चुना गया। इस प्रकार उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में नामांकन के बाद अनुपस्थिति की समस्या के लिए अभिवृत्ति मापनी तैयार की गयी।

अभिवृत्ति मापनी तैयार कर लेने के बाद उसे 20 विद्यार्थियों के न्यादर्श पर प्रशासित किया गया जिसके माध्यम से प्रश्न–निर्माण का कठिनाई स्तर तथा विश्वसनीयता का पता लगाया गया। इसी परीक्षण के आधार पर अभिवृत्ति मापनी को अन्तिम रूप प्रदान किया गया।

6. उपकरण का प्रशासन एवं फलांकन

6.1 अभिवृत्ति मापनी का प्रशासन

100 छात्राओं के लिए "अभिवृत्ति मापनी" तैयार की गयी। "अभिवृत्ति मापनी" का प्रशासन इलाहाबाद

तालिका 5.2.1: अध्ययन का प्रतिदर्श

क्र0 सं0	ब्लॉक	विद्यालय का नाम	छात्राएँ (कक्षा–11)	छात्राएँ (कक्षा–12)	योग
1.	कौड़िहार–II	1. ज्योति बालिका उ0मा0वि0 पुरामुफ्ती इलाहाबाद।	12	13	
		2. महर्षि दयानन्द बालिका इण्टर कॉलेज, मनौरी, इलाहाबाद।	13	12	50
2.	मेजा	1. बी0एन0टी0 इण्टर कॉलेज, मेजा इलाहाबाद।	12	13	
		2. राजेन्द्र बालिका उ0मा0वि0 मेजा इलाहाबाद।	13	12	50

शहर के कौड़िहार–प व मेजा ब्लॉक के चयनित विद्यालयों की छात्राओं पर किया गया था। सर्वप्रथम विभिन्न विद्यालयों की प्रधानाचार्य के पास जाकर उनसे "अभिवृत्ति मापनी" को प्रशासित करने के लिए अनुमति हेतु निवेदन किया गया फिर प्रत्येक छात्रा को एक–एक "अभिवृत्ति मापनी" भरने के लिए दी गयी। निर्देशों को जोर–जोर से पढ़ा गया ताकि सभी छात्राओं को वे निर्देश समझ में आ जाएँ। इसके बाद छात्राओं ने शान्तिपूर्वक "अभिवृत्ति मापनी" भरना प्रारम्भ कर दिया। जब अभिवृति मापनी भर दी गयी तब उनसे लेकर एकत्रित कर लिया गया।

6.2 फलांकन

प्रस्तुत अध्ययन में अभिवृत्ति मापनी द्वारा प्रत्येक क्षेत्र के सम्बन्धित समस्याओं के सभी प्रश्नों पर प्रत्येक छात्राओं की सहमति, तटस्थता एवं असहमति की संख्या को प्राप्त किया गया।

6.3 प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ

प्रस्तुत शोध में गुणात्मक तथा मात्रात्मक दोनों प्रकार की सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया गया था।

6.3.1 *गुणात्मक सांख्यिकीय विधि*

प्रस्तुत अध्ययन में सांख्यिकीय आधार पर प्रतिशत निकाला गया। जैसे– पहले प्रश्न के सम्बन्ध में कौड़िहार–प ब्लॉक की कितनी छात्राएँ सहमत, कितनी तटस्थ व कितनी असहमत हैं। इसी प्रकार मेजा ब्लॉक की पहले प्रश्न से कितनी छात्राएँ सहमत, कितनी तटस्थ व कितनी असहमत हैं, उनकी संख्या प्राप्त की गयी। फिर उन संख्याओं का प्रतिशत निकाला गया। यही प्रक्रिया पूरे 30 प्रश्नों के लिए अपनाई गयी, ताकि कौड़िहार–II तथा मेजा ब्लॉक की छात्राओं की नामांकन के बाद अनुपस्थित होने से सम्बन्धित सभी समस्याओं की तुलना की जा सके।

6.3.2 *मात्रात्मक सांख्यिकीय विधि*

प्रस्तुत अध्ययन में आँकड़ों का विश्लेषण काई–वर्ग द्वारा किया गया जिसमें प्रत्येक क्षेत्र से सम्बन्धित सहमत छात्राओं की संख्या व तटस्थ छात्राओं की संख्या एवं असहमत छात्राओं की संख्या का औसत निकालकर दोनों ब्लॉकों के छात्राओं की प्रेक्षित आवृत्तियाँ ज्ञात की गईं तथा समान वितरण के आधार पर प्रत्याशित आवृत्तियाँ ज्ञात की गईं। इन दोनों आवृत्तियों के माध्यम से काई–वर्ग ज्ञात किया गया। दोनों ब्लॉकों के छात्राओं की समस्याओं के तुलनात्मक अध्ययन के लिए दो चरों के बीच निराश्रयता के आधार पर काई–वर्ग ज्ञात किया गया। अन्त में काई–वर्ग के मान द्वारा उनका परस्पर निर्भरता गुणांक ज्ञात किया गया।

7. आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

किसी भी प्राप्त आँकड़ें का तब तक कोई महत्व नहीं होता है जब तक कि उसका सांख्यिकीय आधार पर विश्लेषण न किया जाय।

अतः प्रस्तुत अध्ययन में कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में नामांकन के बाद अनुपस्थित छात्राओं की प्रत्येक क्षेत्रों – आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक, व्यक्तिगत व विद्यालयीय समस्याओं से सम्बन्धित प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण तृतीय अध्याय में वर्णित सांख्यिकीय विधियों के आधार पर किया गया है। प्रस्तुत अध्याय में आँकड़ों द्वारा प्राप्त परिणाम निम्नवत् रहे–

7.1 कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक की छात्राओं के उत्तरों द्वारा प्राप्त आवृत्तियों का प्रदर्शन

प्रस्तुत शोध में कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक की आर्थिक सामाजिक, पारिवारिक, व्यक्तिगत व विद्यालयीय समस्याओं से सम्बन्धित प्रत्येक प्रश्न के उत्तर (जो कि सहमत, तटस्थ, व असहमत की संख्या है) को जोड़कर आवृत्तियाँ ज्ञात की गयी हैं। तत्पश्चात् आवृत्तियों का औसत ज्ञात किया गया है। प्राप्त सांख्यिकी परिणामों का मान निम्नलिखित तालिकाओं में प्रदर्शित किया गया हैः

तालिका संख्या 7.1.1: कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक की छात्राओं की आर्थिक समस्याओं द्वारा प्राप्त उत्तरों की आवृत्तियाँ एवं प्रतिशत का औसत

क्रम सं0	छात्राओं की आवृत्तियाँ				छात्राओं की आवृत्तियाँ (प्रतिशत में)			
	सहमत	तटस्थ	असहमत	योग	सहमत	तटस्थ	असहमत	योग
1.	18	7	75	100	18%	7%	75%	100%
2.	11	13	76	100	11%	13%	76%	100%
3.	13	13	74	100	13%	13%	74%	100%
4.	24	25	51	100	24%	25%	51%	100%
5.	12	7	81	100	12%	7%	81%	100%
औसत	16	13	71	100	16%	13%	71%	100%

तालिका संख्या 7.1.2: कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक की छात्राओं की सामाजिक समस्याओं द्वारा प्राप्त उत्तरों की आवृत्तियाँ एवं प्रतिशत का औसत

क्रम सं0	छात्राओं की आवृत्तियाँ				छात्राओं की आवृत्तियाँ (प्रतिशत में)			
	सहमत	तटस्थ	असहमत	योग	सहमत	तटस्थ	असहमत	योग
1.	14	12	74	100	14%	12%	74%	100%
2.	7	9	84	100	7%	9%	84%	100%
3.	9	16	75	100	9%	16%	75%	100%
4.	7	11	82	100	7%	11%	82%	100%
औसत	9	12	79	100	9%	12%	79%	100%

तालिका संख्या 3 : कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक की छात्राओं की पारिवारिक समस्याओं द्वारा प्राप्त उत्तरों की आवृत्तियाँ एवं प्रतिशत का औसत

क्रम सं0	छात्राओं की आवृत्तियाँ				छात्राओं की आवृत्तियाँ (प्रतिशत में)			
	सहमत	तटस्थ	असहमत	योग	सहमत	तटस्थ	असहमत	योग
1.	25	17	58	100	25%	17%	58%	100%
2.	10	11	79	100	10%	11%	79%	100%
3.	11	29	60	100	11%	29%	60%	100%
औसत	15	19	66	100	15%	19%	66%	100%

तालिका संख्या 7.1.4 : कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक की छात्राओं की व्यक्तिगत समस्याओं द्वारा प्राप्त उत्तरों की आवृत्तियाँ एवं प्रतिशत का औसत

क्रम सं0	छात्राओं की आवृत्तियाँ				छात्राओं की आवृत्तियाँ (प्रतिशत में)			
	सहमत	तटस्थ	असहमत	योग	सहमत	तटस्थ	असहमत	योग
1.	15	55	30	100	15%	55%	30%	100%
2.	6	15	79	100	6%	15%	79%	100%
3.	5	17	78	100	5%	17%	78%	100%
4.	18	19	63	100	18%	19%	63%	100%
5.	11	29	60	100	11%	29%	60%	100%
6.	17	12	71	100	17%	12%	71%	100%
7.	11	12	78	100	11%	12%	78%	100%
8.	23	23	54	100	23%	23%	54%	100%
9.	17	30	53	100	17%	30%	53%	100%
10.	6	24	70	100	6%	24%	70%	100%
11.	8	16	76	100	8%	16%	76%	100%
औसत	12	23	65	100	12%	23%	65%	100%

तालिका संख्या 7.1.5: कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक की छात्राओं की विद्यालयीय समस्याओं द्वारा प्राप्त उत्तरों की आवृत्तियाँ एवं प्रतिशत का औसत

क्रम सं0	छात्राओं की आवृत्तियाँ				छात्राओं की आवृत्तियाँ (प्रतिशत में)			
	सहमत	तटस्थ	असहमत	योग	सहमत	तटस्थ	असहमत	योग
1.	4	17	79	100	4%	17%	79%	100%
2.	7	17	76	100	7%	17%	76%	100%
3.	4	11	85	100	4%	11%	85%	100%
4.	10	14	76	100	10%	14%	76%	100%
5.	9	18	73	100	9%	18%	73%	100%
6.	7	19	74	100	7%	19%	74%	100%
7.	11	7	82	100	11%	7%	82%	100%
औसत	7	15	78	100	7%	15%	78%	100%

7.2 कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक की छात्राओं द्वारा प्राप्त उत्तरों की आवृत्तियों का दण्डारेख द्वारा प्रदर्शन एवं व्याख्या

प्रस्तुत अध्ययन में सभी क्षेत्रों– आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक, व्यक्तिगत व विद्यालयीय समस्याओं से सम्बन्धित तालिका संख्या 1, 2, 3, 4 व 5 में प्रदर्शित प्रतिशत आवृत्तियों के औसतों द्वारा दण्डारेख का प्रदर्शन एवं व्याख्या किया गया है।

पैमाना

1 सेमी0 = 1 क्षेत्र की समस्याएँ (X - अक्ष)

2 सेमी0 = 5 आवृत्तियाँ (प्रतिशत में) (X - अक्ष)

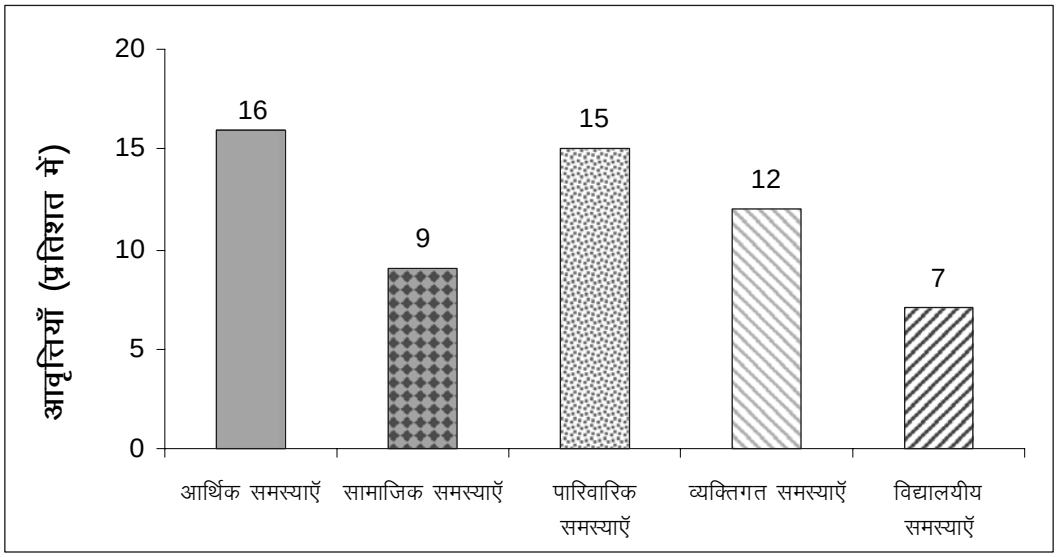

ग्राफ संख्या 1: सहमत के आधार पर छात्राओं द्वारा प्राप्त उत्तरों की आवृत्तियों का दण्डारेख प्रदर्शन

समस्याओं का क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन में ग्रफ संख्या–1 द्वारा प्रदर्शित होता हैकि विद्यालय में नामांकन केबाद अनुपस्थित छात्राओं की सहमति सबसे अधिक (16%) आर्थिक समस्याओं पर व्यक्त की गयी है। उसके बाद छात्राओं द्वारा अनुपस्थिति के कारणों में सहमति (15%) पारिवारिक समस्याओं के प्रति व्यक्त की गयी है। (12%) सहमति छात्राओं द्वारा व्यक्तिगत समस्याओं के प्रति व्यक्त की गयी है। तत्पश्चात् छात्राओं द्वारा (9%) सहमति सामाजिक समस्याओं के प्रति व्यक्त की गयी है। छात्राओं की अनुपस्थिति के कारणों में सबसे कम सहमति विद्यालयीय समस्याओं के प्रति व्यक्त की गयी है।

प्रस्तुत साक्ष्य द्वारा प्रदर्शित होता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में नामांकन के बाद अनुपस्थित होने वाली (16%) छात्राओं को सबसे अधिक आर्थिक समस्याएँ प्रभावित करती है। उसके बाद (15%) छात्राओं को पारिवारिक समस्याएँ प्रभावित करती है जिस वजह से छात्राएँ नामांकन तो करा लेती हैं पर प्रतिदिन विद्यालय में उपस्थित नहीं हो पाती हैं। (12%) छात्राऍं व्यक्तिगत समस्याओं द्वारा प्रभावित होती हैं और वह विद्यालय नहीं आती हैं। (9%) छात्राओ पर सामाजिक समस्याओं का प्रभाव पड़ता है जिस वजह से वह प्रतिदिन विद्यालय नहीं आती है। इन सबकी तुलना में विद्यालयीय समस्याओं का प्रभाव कम पड़ता है। (7%) छात्राएँ ही विद्यालयीय समस्याओं द्वारा प्रभावित पायी गयी हैं। अतः स्पष्ट है कि उपर्युक्त सभी समस्याओं का प्रभाव छात्राओं की उपस्थिति पर प्रभावी कारक के रूप में पड़ता है।

समस्याओं का क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन में ग्राफ संख्या–2 द्वारा प्रदर्शित होता है कि सबसे अधिक (23%) छात्राएँ अनुपस्थिति के कारणों में व्यक्तिगत समस्याओं के प्रति तटस्थ पायी गयी है। उसके बाद (19%) छात्राएँ पारिवारिक समस्याओं के प्रति तटस्थ पायी गयी हैं। (15%) छात्राएँ विद्यालयीय समस्याओं के प्रति तटस्थ पायी गयी हैं तथा (13%) छात्राएँ आर्थिक समस्याओं के प्रति तटस्थ पायी गयी हैं। (12%) छात्राओं द्वारा सामाजिक समस्याओं के प्रति तटस्थता व्यक्त की गयी है।

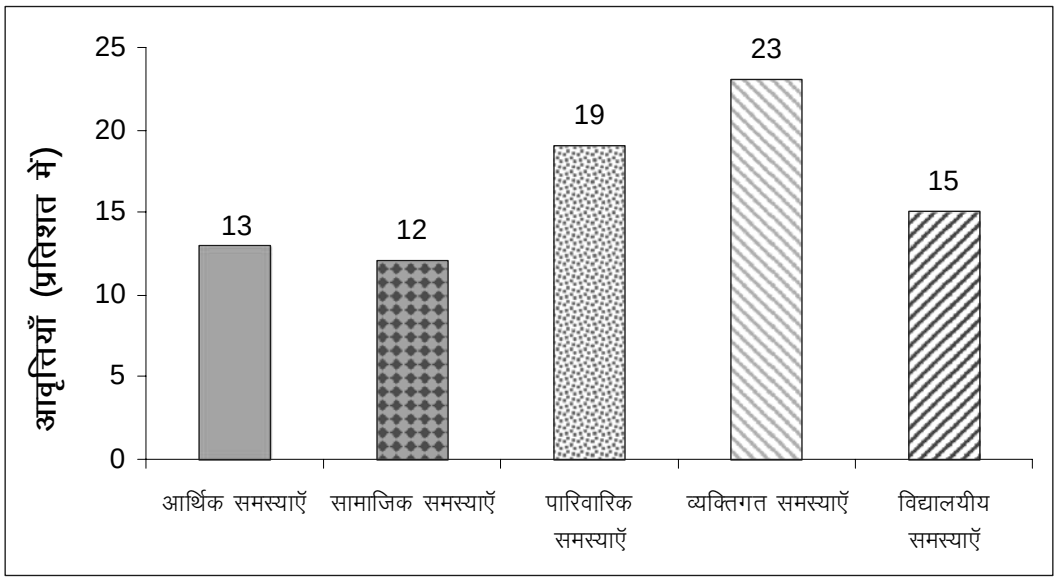

ग्राफ संख्या 2: तटस्थ के आधार पर छात्राओं द्वारा प्राप्त उत्तरों की आवृत्तियों का दण्डारेख प्रदर्शन

इस साक्ष्य द्वारा प्रदर्शित होता है कि नामांकन के बाद विद्यालय में अनुपस्थित होने वाली (13%) छात्राओं ने व्यक्तिगत समस्याओं के प्रति अपना कोई विचार व्यक्त नहीं किया अर्थात् व्यक्तिगत समस्याओं का छात्राओं के ऊपर प्रभाव पड़ता है या नहीं इस पर न तो वह सहमत है न ही असहमत हैं। (19%) छात्राएँ ऐसी हैं जिन पर पारिवारिक समस्याओं का प्रभाव पड़ता है कि नहीं इस विषय पर अपना विचार व्यक्त नहीं कर पायीं। (15%) छात्राएँ विद्यालयीय समस्याओं का प्रभाव पड़ता है कि नहं इस समस्या पर अपना विचार व्यक्त नहीं कर पायीं। (13%) छात्राएँ ऐसी थी जो आर्थिक समस्याओं का उन पर प्रभाव पड़ता है कि नहीं इस पर उन्होंने न ही सहमति दर्शायी है न ही असहमति दर्शायी और (12%) छात्राओं ने सामाजिक समस्याओं के प्रभाव पर न ही अपनी सहमति प्रकट की है न ही असहमति प्रकट की है। अतः स्पष्ट है कि उपर्युक्त समस्याओं का प्रभाव छात्राओं के ऊपर पड़ता है इस पर उन्होंने अपना कोई विचार व्यक्त नहीं किया न ही सहमत और न ही असहमत।

समस्याओं का क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन में ग्राफ संख्या–3 द्वारा प्रदर्शित होता है (79%) छात्राओं ने सामाजिक समस्याओं के कारण विद्यालय न आने में असहमति व्यक्त की है। उसके बाद (78%) छात्राओं में विद्यालयीय समस्याओं पर असहमति व्यक्त की है। विद्यालय न आने वाले कारणों में (71%) छात्राओं ने आर्थिक समस्याओं के प्रति असहमति व्यक्त की है। पारिवारिक समस्याओं के कारण विद्यालय न आने वाली (66%) छात्राओं ने असहमति व्यक्त की है तथा सबसे कम (65%) छात्राओं ने व्यक्तिगत समस्याओं के प्रति अपनी असहमति व्यक्त की है।

इस साक्ष्य द्वारा प्रदर्शित होता है कि (79%) छात्राओं द्वारा व्यक्त किया गया है कि सामाजिक समस्याओं का उनकी उपस्थिति पर प्रभाव नहीं पड़ता हे उसके बाद (78%) छात्राओं ने विद्यालयीय समस्याओं को उपस्थिति के लिए जिम्मेदार नहीं माना है। (71%) छात्राओं का विचार है कि उन्हें आर्थिक समस्यायें

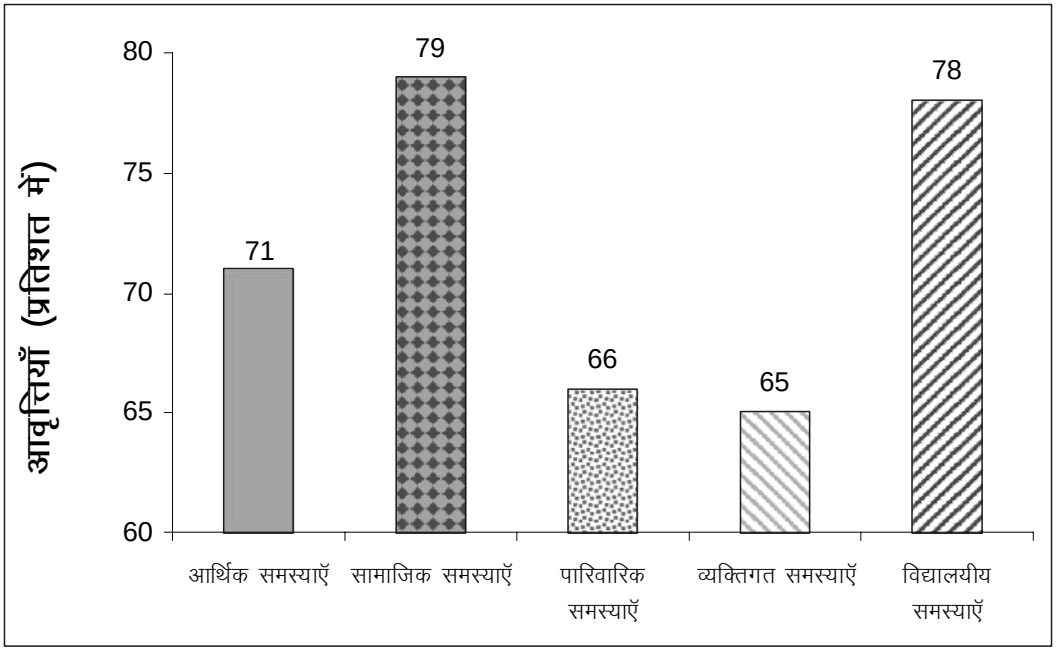

ग्राफ संख्या 3: असहमत के आधार पर छात्राओं द्वारा प्राप्त उत्तरों की आवृत्तियों का दण्डारेख प्रदर्शन

प्रभावित नहीं करती हैं। (66%) छात्राओं का मानना है कि पारिवारिक समस्यायें उनकी उपस्थिति पर प्रभाव नहीं डालती। (65%) छात्राओं की मनोवृत्ति व्यक्तिगत समस्याओं के प्रति प्रभावित नहीं पायी गयी है।

अतः ग्राफ संख्या–1, 2, व 3 से यही स्पष्ट होता है कि असहमति का प्रतिशत उपर्युक्त सभी कारणों में अधिक है तथा सहमति का प्रतिशत कम है अतः इससे सिद्ध होता है कि ये सभी समस्याएँ छात्राओं की उपस्थिति को बहुत कम प्रभावित करती हैं।

7.3 काई–वर्ग की गणना द्वारा प्राप्त काई–वर्ग के मान के आधार पर परिकल्पनाओं की स्थिति

छात्राओं के उत्तरों से प्राप्त आवृत्तियों द्वारा काई–वर्ग की गणना की गयी है तथा प्राप्त काई–वर्ग का मान तालिकाओं में प्रदर्शित किया गया है एवं उनके आधार पर परिकल्पनाओं की स्थिति व्यक्त की गयी है।

प्रेक्षित आवृत्तियाँ प्राप्त हैं तथा प्रत्याशित आवृत्तियाँ समान वितरण के आधार पर प्राप्त की गयी हैं परिणाम निम्नलिखित तालिकाओं में प्रदर्शित किया गया है।

कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में नामांकित छात्राओं की उपस्थिति पर आर्थिक समस्याओं के प्रभाव

तालिका संख्या–7.3.1 प्रदर्शित करता है कि कुल बालिकाओं की संख्या 100 थी जिसमें सहमत, तटस्थ, असहमत छात्राओं की प्रेक्षित आवृत्तियाँ (f_0) = 16, 13, 71 थी तथा प्रत्याशित आवृत्तियाँ (f_e) = 33.33, 33.33, 33.33 निकाली गई हैं। जिनके द्वारा प्राप्त काई–वर्ग का मान 63.99 है जो कि 0.05 व 0.01 दोनों विश्वास स्तरों पर सार्थक का परिसूचक है। अत शून्य परिकल्पना (H_0) . ''कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में नामांकित छात्राओं की उपस्थिति पर आर्थिक समस्याओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है'' निरस्त की जाती है तथा मुख्य परिकल्पना (H_1) – ''उच्चतर माध्यमिक स्तर पर नामांकित छात्राओं **की अनुपस्थिति में आर्थिक कारकों का प्रभाव पड़ता है''** स्वीकृत की जाती है।

इस साक्ष्य के द्वारा प्रदर्शित है कि कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में नामांकित छात्राओं की उपस्थिति पर आर्थिक समस्याओं पर प्रभाव पड़ता है।

तालिका संख्या 7.3.1 : परिकल्पना संख्या 1. कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में नामांकित छात्राओं की उपस्थिति पर आर्थिक समस्याओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

आवृत्तियाँ	सहमत	तटस्थ	असहमत	योग
प्रेक्षित आवृत्तियाँ (f_o)	16	13	71	100
प्रत्याशित आवृत्तियाँ (f_e)	33.33	33.33	33.33	100
df = 2	(काई–वर्ग) $x^2 = \frac{\sum (f_o - f_e)^2}{f_e} = 63.99$			

तालिका संख्या 7.3.2 : परिकल्पना संख्या 2. कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में नामांकित छात्राओं की उपस्थिति पर सामाजिक समस्याओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

आवृत्तियाँ	सहमत	तटस्थ	असहमत	योग
प्रेक्षित आवृत्तियाँ (f_o)	9	12	79	100
प्रत्याशित आवृत्तियाँ (f_e)	33.33	33.33	33.33	100
df = 2	(काई–वर्ग) $x^2 = \frac{\sum(f_o - f_e)^2}{f_e} = 93.99$			

कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में नामांकित छात्राओं की उपस्थिति पर सामाजिक समस्याओं के प्रभाव

तालिका संख्या–7 प्रदर्शित करता है कि कुल बालिकाओं की संख्या 100 थी जिसमें सहमत, तटस्थ, असहमत छात्राओं की प्रेक्षित आवृत्तियाँ (f_0) = 9, 12, 79 थी तथा प्रत्याशित आवृत्तियाँ (f_e) = 33.33, 33.33, 33.33 निकाली गई हैं। जिनके द्वारा प्राप्त काई–वर्ग का मान 93.99 है जो कि 0.05 व 0.01 दोनों विश्वास स्तरों पर सार्थकता का परिसूचक है। अत शून्य परिकल्पना (H_0) – ''कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में नामांकित छात्राओं की उपस्थिति पर सामाजिक समस्याओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है'' निरस्त की गई। तदनुसार मुख्य परिकल्पना (H_1) – ''उच्चतर माध्यमिक स्तर पर नामांकित छात्राओं की अनुपस्थिति में सामाजिक कारकों का प्रभाव पड़ता है'' स्वीकृत की गई।

इस साक्ष्य के द्वारा प्रदर्शित है कि कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में नामांकित छात्राओं की उपस्थिति पर सामाजिक समस्याओं पर प्रभाव पड़ता है।

कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में नामांकित छात्राओं की उपस्थिति पर पारिवारिक समस्याओं के प्रभाव

तालिका संख्या–7.3.3 प्रदर्शित करता है कि कुल बालिकाओं की संख्या 100 थी जिसमें सहमत, तटस्थ, असहमत छात्राओं की प्रेक्षित आवृत्तियाँ (f_0) = 15,

तालिका संख्या 7.3.3 : परिकल्पना संख्या 3. कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में नामांकित छात्राओं की उपस्थिति पर पारिवारिक समस्याओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

आवृत्तियाँ	सहमत	तटस्थ	असहमत	योग
प्रेक्षित आवृत्तियाँ (f_o)	15	19	66	100
प्रत्याशित आवृत्तियाँ (f_e)	33.33	33.33	33.33	100
df = 2	(काई–वर्ग) $x^2 = \frac{\sum(f_o - f_e)^2}{f_e} = 48.26$			

19, 66 थी तथा प्रत्याशित आवृत्तियाँ (f_e) = 33.33, 33.33, 33.33 निकाली गई हैं। जिनके द्वारा प्राप्त काई–वर्ग का मान 48.26 है जो कि 0.05 व 0.01 दोनों विश्वास स्तरों पर सार्थकता का परिसूचक है। अत शून्य परिकल्पना (H_0) – ''कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में नामांकित छात्राओं की उपस्थिति पर पारिवारिक समस्याओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है'' निरस्त की गई। तदनुसार मुख्य परिकल्पना (H_1) – ''उच्चतर माध्यमिक स्तर पर नामांकित छात्राओं की अनुपस्थिति में पारिवारिक कारकों का प्रभाव पड़ता है'' स्वीकृत की गई ।

इस साक्ष्य के द्वारा प्रदर्शित है कि कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में नामांकित छात्राओं की उपस्थिति पर पारिवारिक समस्याओं पर प्रभाव पड़ता है।

कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में नामांकित छात्राओं की उपस्थिति पर व्यक्तिगत समस्याओं के प्रभाव

तालिका संख्या–7.3.4 प्रदर्शित करता है कि कुल बालिकाओं की संख्या 100 थी जिसमें सहमत, तटस्थ, असहमत छात्राओं की प्रेक्षित आवृत्तियाँ (f_0) = 12, 23, 65 थी तथा प्रत्याशित आवृत्तियाँ (f_e) = 33.33, 33.33, 33.33 निकाली गई हैं। जिनके द्वारा प्राप्त काई–वर्ग का मान 46.94 है जो कि 0.05 व 0.01 दोनों विश्वास स्तरों पर सार्थकता का परिसूचक है। अत शून्य परिकल्पना (H_0) – **''कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में नामांकित छात्राओं की उपस्थिति पर व्यक्तिगत समस्याओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है'' निरस्त की गई। तदनुसार मुख्य परिकल्पना (H_1) – ''उच्चतर माध्यमिक स्तर पर नामांकित छात्राओं की अनुपस्थिति में व्यक्तिगत कारकों का प्रभाव पड़ता है'' स्वीकृत की गई।**

इस साक्ष्य के द्वारा प्रदर्शित है कि कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में नामांकित छात्राओं की उपस्थिति पर व्यक्तिगत समस्याओं पर प्रभाव पड़ता है।

कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में नामांकित छात्राओं की उपस्थिति पर विद्यालयीय समस्याओं के प्रभाव

तालिका संख्या–7.3.5 प्रदर्शित करता है कि कुल बालिकाओं की संख्या 100 थी जिसमें सहमत, तटस्थ, असहमत छात्राओं की प्रेक्षित आवृत्तियाँ (f_0) = 7, 15, 78 थी तथा प्रत्याशित आवृत्तियाँ (f_e) = 33.33, 33.33, 33.33 निकाली गई हैं। जिनके द्वारा प्राप्त काई–वर्ग का मान 90.75 है जो कि 0.05 व 0.01

तालिका संख्या 7.3.4: परिकल्पना संख्या 4. कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में नामांकित छात्राओं की उपस्थिति पर व्यक्तिगत समस्याओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

आवृत्तियाँ	सहमत	तटस्थ	असहमत	योग
प्रेक्षित आवृत्तियाँ (f_o)	12	23	65	100
प्रत्याशित आवृत्तियाँ (f_e)	33.33	33.33	33.33	100
df = 2	(काई–वर्ग) $x^2 = \frac{\sum (f_o - f_e)^2}{f_e} = 46.94$			

तालिका संख्या 7.3.5: परिकल्पना संख्या 5. कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में नामांकित छात्राओं की उपस्थिति पर विद्यालयीय समस्याओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

आवृत्तियाँ	सहमत	तटस्थ	असहमत	योग
प्रेक्षित आवृत्तियाँ (f_o)	7	15	78	100
प्रत्याशित आवृत्तियाँ (f_e)	33.33	33.33	33.33	100
df = 2	(काई–वर्ग) $x^2 = \frac{\sum (f_o - f_e)^2}{f_e} = 90.75$			

दोनों विश्वास स्तरों पर सार्थकता का परिसूचक है। अत शून्य परिकल्पना (H_0) – ''कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में नामांकित छात्राओं की उपस्थिति पर विद्यालयीय समस्याओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है'' निरस्त की गई। तदनुसार मुख्य परिकल्पना (H_1) – ''उच्चतर माध्यमिक स्तर पर नामांकित छात्राओं की अनुपस्थिति में विद्यालयीय कारकों का प्रभाव पड़ता है'' स्वीकृत की गई।

इस साक्ष्य के द्वारा प्रदर्शित है कि कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में नामांकित छात्राओं की उपस्थिति पर विद्यालयीय समस्याओं पर प्रभाव पड़ता है।

8. निष्कर्ष

साँख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित है–

प्रस्तुत अध्ययन द्वारा प्राप्त कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक की आर्थिक समस्याओं, (जैसे–घर की आमदनी कम होने के कारण बालिकाओं का मजदूरी करना, घर से विद्यालय दूर होने के कारण किराया अधिक लगना, आमदनी कम होने के कारण किताबें व ड्रेस उपलब्ध न होना, फीस जमा न कर पाना आदि) के कारण विद्यालय न जाने वाली छात्राओं में (16%) छात्राओं की सहमति प्राप्त हुई है तथा (13%) छात्रा तटस्थ है अर्थात् इन समस्याओं के प्रति छात्राओं ने अपना कोई विचार व्यक्त नहीं किया है। (71%) छात्राओं ने इस समस्या के प्रति असहमति व्यक्त की है। छात्राओं द्वारा प्राप्त इन उत्तरों के आधार पर काई–वर्ग का मान 63.99 प्राप्त हुआ है जो 0.05 व 0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया।

इस साक्ष्य द्वारा स्पष्ट है कि कौड़िहार–II और मेजा ब्लॉक की उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं की उपस्थिति पर आर्थिक समस्याओं का प्रभाव पड़ता है तथा इस समस्या के कारण वह विद्यालय नहीं जा पाती हैं।

प्रस्तुत अध्ययन द्वारा प्राप्त कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक की सामाजिक समस्याओं, (जैसे–शादी–विवाह के समय बालिका शिक्षा के बारे में पूछताछ करने के कारण केवल विद्यालय में नामांकन कराना, अभिभावक का अशिक्षित होना, अभिभावक की मनोवृत्ति पुरानी विचारधारा का होना, सहशिक्षा आदि) के कारण विद्यालय न जाने वाली छात्राओं में (9%) छात्राओं की सहमति प्राप्त हुई है तथा (12%) छात्रा तटस्थ है अर्थात् इन समस्याओं के प्रति छात्राओं ने अपना कोई विचार व्यक्त नहीं किया है। (79%) छात्राओं ने इस समस्या के प्रति असहमति व्यक्त की है। छात्राओं द्वारा प्राप्त इन उत्तरों के आधार पर काई–वर्ग का मान 93.99 प्राप्त हुआ है जो 0.05 व 0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया।

इस साक्ष्य द्वारा स्पष्ट है कि कौड़िहार–II और मेजा ब्लॉक की उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं की उपस्थिति पर सामाजिक समस्याओं का प्रभाव पड़ता है तथा इस समस्या के कारण वह विद्यालय नहीं जा पाती हैं।

प्रस्तुत अध्ययन द्वारा प्राप्त कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक की पारिवारिक समस्याओं, (जैसे–माता–पिता खेती का कार्य करने के लिए खेत पर चले जाते हैं तो घर का कार्य देखना, भाई–बहन की संख्या अधिक होने के कारण उनकी देखभाल के लिए घर पर रहना, शादी–विवाह के बाद ससुराल वालों से विद्यालय जाने की अनुमति न मिलना आदि) के कारण विद्यालय न जाने वाली छात्राओं में (15%) छात्राओं की सहमति प्राप्त हुई है तथा (19%) छात्रा तटस्थ है अर्थात् इन समस्याओं के प्रति छात्राओं ने अपना कोई विचार व्यक्त नहीं किया है। (66%) छात्राओं ने इस समस्या के प्रति असहमति व्यक्त की है। छात्राओं द्वारा प्राप्त इन उत्तरों के आधार पर काई–वर्ग का मान 48.26 प्राप्त हुआ है जो 0.05 व 0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया।

इस साक्ष्य द्वारा स्पष्ट है कि कौड़िहार–II और मेजा ब्लॉक की उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं की उपस्थिति पर पारिवारिक समस्याओं का प्रभाव पड़ता है तथा इस समस्या के कारण वह विद्यालय नहीं जा पाती हैं।

प्रस्तुत अध्ययन द्वारा प्राप्त कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक की व्यक्तिगत समस्याओं, (जैसे–विद्यालय जाने में आने वाली समस्याएं जैसे– तेज धूप, वर्षा, ठण्डी, आदि, यातायात साधनों का अभाव, विद्यालय आने जाने में थकान लगना, समय से विद्यालय न पहुंचना, घर के कार्यों में अधिक रूचि लेना, पढ़ने में रूचि न होना, विद्यालय में अत्यधिक अनुशासन के डर के कारण विद्यालय न जाना, शारीरिक अस्वस्थता, सहपाठियों का व्यवहार अच्छा न होना, मन–पसंद विद्यालय न होना आदि) के कारण विद्यालय न जाने वाली छात्राओं में (12%) छात्राओं की सहमति प्राप्त हुई है तथा (23%) छात्रा तटस्थ है अर्थात् इन समस्याओं के प्रति छात्राओं ने अपना कोई विचार व्यक्त नहीं किया है। (65%) छात्राओं ने इस समस्या के प्रति असहमति व्यक्त की है। छात्राओं द्वारा प्राप्त इन उत्तरों के आधार पर काई–वर्ग का मान 46.94 प्राप्त हुआ है जो 0.05 व 0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया।

इस साक्ष्य द्वारा स्पष्ट है कि कौड़िहार–II और मेजा ब्लॉक की उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं की उपस्थिति पर व्यक्तिगत समस्याओं का प्रभाव पड़ता है तथा इस समस्या के कारण वह विद्यालय नहीं जा पाती हैं।

प्रस्तुत अध्ययन द्वारा प्राप्त कौड़िहार–II व मेजा ब्लॉक की विद्यालयीय समस्याओं, (जैसे– पुस्तकालय में अच्छी पुस्तकें न होना, अध्ययन कक्ष व बैठक व्यवस्था ठीक न होना, विद्यालय का प्राकृतिक वातावरण अच्छा न होना, विद्यालय में प्रसाधन सुविधा उपलब्ध न होना, शैक्षिक वातावरण संतोषप्रद न होना, पाठ्यक्रम कठिन होना, महिला अध्यापिकाओं की कमी होना आदि) के कारण विद्यालय न जाने वाली छात्राओं में (7%) छात्राओं की सहमति प्राप्त हुई है तथा (15%) छात्रा तटस्थ है अर्थात् इन समस्याओं के प्रति छात्राओं ने अपना कोई विचार व्यक्त नहीं किया है। (78%) छात्राओं ने इस समस्या के प्रति असहमति व्यक्त की है। छात्राओं द्वारा प्राप्त इन उत्तरों के आधार पर काई–वर्ग का मान 90.75 प्राप्त हुआ है जो 0.05 व 0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया।

इस साक्ष्य द्वारा स्पष्ट है कि कौड़िहार–II और मेजा ब्लॉक की उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं की उपस्थिति पर विद्यालयीय समस्याओं का प्रभाव पड़ता है तथा इस समस्या के कारण वह विद्यालय नहीं जा पाती हैं।

9. सुझाव

1. माता–पिता एक साथ काम पर न जाएँ बल्कि अलग–अलग समयों में कार्य करके घर की देखभाल

कर सकते हैं जिससे बालिकाओं द्वारा घर देखने वाली समस्या का समाधान किया जा सकता है।

2. शिक्षा द्वारा जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण की जानकारी प्रदान करके भाई–बहन की संख्या अधिक होने की समस्या दूर की जा सकती है।
3. फीस, ड्रेस, किताबों की समस्याओं को सरकार द्वारा प्राप्त छात्रवृत्ति व्यवस्था से दूर किया जा सकता है।
4. माताओं के लिए घर में उद्योग के अवसर प्रदान किये जा सकते हैं जिससे घर का कार्य देखने के साथ–साथ आमदनी कम होने की समस्या को दूर किया जा सकता है।
5. शादी–विवाह के बाद ससुराल वालों को स्त्री शिक्षा के महत्व के बारे में बताकर स्त्रियों को विद्यालय न भेजने की समस्या को दूर किया जा सकता है।
6. स्त्री शिक्षा के प्रति अभिभावकों की पुरानी विचारधारा को बदलने के लिए विभिन्न संचार माध्यमों जैसे– टी0वी0, रेडियो, प्रदर्शनी, आदि का प्रयोग किया जा सकता है।
7. व्यक्तिगत समस्याओं को परिस्थितियों के साथ समझौता करके दूर किया जा सकता है।
8. विद्यालयीय समस्याओं को प्रबन्धक तथा प्रधानाचार्य के आपसी विचार–विमर्श द्वारा दूर किया जा सकता है।
9. पुस्तकालय में अच्छी पुस्तकों की व्यवस्था की जा सकती है।
10. प्रशिक्षित अध्यापिकाओं की सहायता से रूचिकर शैक्षिक वातावरण तैयार किया जा सकता है।
11. महिला अध्यापिकाओं की नियुक्ति को बढ़ाकर शिक्षिकाओं के अभाव को दूर किया जा सकता है।
12. कठिन पाठ्यक्रम को उचित शिक्षण विधियों द्वारा रूचिकर बनाया जा सकता है।

10. भावी अनुसंधान के क्षेत्र

1. इस अध्ययन को एक बड़े न्यादर्श पर सम्पन्न किया जा सकता है जिससे बालिकाओं की समस्याओं का स्पष्ट चित्र उभर कर सामने आ सके।
2. इस प्रकार का अनुसंधान बालकों के न्यादर्श पर भी करना वांछनीय होगा।
3. शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर बालक व बालिकाओं की भिन्न–भिन्न समस्याओं का अध्ययन भी आवश्यक है।
4. इस अध्ययन में कुछ समस्याएँ अन्य क्षेत्रों जैसे– धार्मिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, राजनैतिक को भी सम्मिलित किया जा सकता है जिससे अध्ययन और भी प्रभावशाली बन सके।
5. अभिभावकों की अभिवृत्ति के ऊपर और अधिक अध्ययन किया जाए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- मित्रा ए0एल0. (1961). एजुकेशन ऑफ वोमेन इन इण्डिया, p.p. 1921 1955, पी–एच0डी0, सागर यूनिवर्सिटी ।
- लाल एस0 के0 (1974). एजुकेशनल प्रोग्राम एण्ड प्रॉब्लम्स ऑफ शेडूल्ड कास्ट एण्ड शेडूल्ड ट्राइव कॉलेज स्टूडेन्ट्स इन राजस्थान डिप0 ऑफ सोशियोलॉजी, जोधपुर यूनिवर्सिटी ।
- सरोज (2003). एजुकेशनल प्रॉब्लम्स ऑफ गर्ल्स एट वेरियस एजुकेशनल लेवल ऑफ बस्ती डिस्ट्रिक पी–एच0डी0 दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर यूनिवर्सिटी, गोरखपुर ।